भट्टारक अभिनव धर्मभूषण

जीवन-परिचय : धर्मभूषण नाम के अनेक विद्वान हुए हैं। उनमें अभिनव धर्मभूषण भिन्न हैं। इन्होंने अपने को 'अभिनव', 'यति' और 'आचार्य' विशेषणों के साथ उल्लेखित किया है। ये भट्टारक वर्द्धमान के शिष्य थे। विजयनगर के द्वितीय शिलालेख में इनकी गुरुपरम्परा इस प्रकार दी गई है—

भट्टारक पद्मनन्दी, धर्मभूषण, अमरकीर्ति, धर्मभूषण द्वितीय, वर्द्धमान और अभिनव धर्मभूषण। ये अपने समय के अच्छे व्याख्याता, प्रतिभाशाली एवं प्रसिद्ध विद्वान थे। इनका व्यक्तित्व महान था। विजयनगर के राजा देवराय प्रथम, जो राजाधिराज परमेश्वर की उपाधि से विभूषित थे, इनके चरणों की पूजा किया करते थे। ये मुनियों और राजाओं द्वारा पूजित थे।

भट्टारक अभिनव धर्मभूषण का समय ईसा की 14वीं शताब्दी का उत्तरार्ध और 15वीं शताब्दी का पूर्वार्ध सुनिश्चित है।

रचना-परिचय : आचार्य ने जैन न्याय पर बहुत महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ लिखा है—

1. न्यायदीपिका : 'न्यायदीपिका' आपकी एकमात्र कृति है, जो अत्यन्त विशद और महत्त्वपूर्ण कृति है। यह जैन न्याय के प्राथमिक अभ्यासियों के लिए बहुत उपयोगी है। इसकी भाषा सुगम और सरल है। जिससे यह जल्दी ही विद्यार्थियों के लिए रुचिकर बन जाती है। इसमें तीन प्रकाश या अध्याय हैं—

प्रथमप्रकाश में प्रमाण का सामान्य लक्षण, उसकी प्रमाणता, बौद्ध, भट्ट, प्रभाकर और नैयायिकों द्वारा मान्य प्रमाण लक्षणों की समीक्षा की गयी है। जैनमत के सम्यग्ज्ञानत्व को प्रमाण का निर्दोष लक्षण स्थिर किया है। दूसरे प्रकाश में प्रत्यक्ष का स्वरूप, लक्षण, भेद-प्रभेदादि का वर्णन करते हुए अतीन्द्रिय प्रत्यक्ष का समर्थन कर सर्वज्ञसिद्धि आदि का कथन किया गया है। तीसरे प्रकाश में परोक्ष का लक्षण, उसके भेद-प्रभेद, साध्य-साधनादि का लक्षण, हेतु, अनुमान, हेत्वाभासों का वर्णन तथा अन्त में आगम और नय का कथन करते हुए अनेकान्त तथा सप्तभंगी का संक्षेप में प्रतिपादन किया है।